Azmat -e-Maa

POETRY BOOK

अज़्मत-ए-माँ

मुझको झूले में जब झुलाती है।
माँ मुझे लोरियाँ सुनाती है।

mujhako jhoole mein jab jhulaatee hai.
maan mujhe loriyaan sunaatee hai.

Anjum Lucknowi~

Anjum Lucknowi~
Author

Book Name	:	Azam-e-Maa (अज़्मत-ए-माँ)
Author	:	Anjum Lucknowi
Sequence	:	Makki Ashraf
Proofreading	:	Tabrez Khan
Translation	:	Nehal Azmi + Wajid Khan
worth	:	₹180
First Edition	:	Oct,2014
Second Edition	:	Aug, 2020
Numbers	:	One thousand (1000)
Publisher	:	Bazm-e-Urdu Adab Kavi Sanstha, Mumbai,Maharashtra
E-ISBN	:	9798215506295

Azmat-e-Maa (अज़्मत-ए-माँ)

लेखक : अंजुम लखनवी
पता : इंद्रा नगर, फैजान ए रज़ा मस्जिद रोड नंबर के पास, 14 बैगनवाड़ी, गोवंडी, मुंबई - 400043
प्रथम संस्करण संस्करण: उर्दू भाषा 2017
कीमत : ₹300
e-ISBN: 9798215506295

Bazm e Urdu Adab Kavi Sanstha Sanstha (Publisher)
Add: Indra Nagar, Al Aish Enterprises Road No, 14
Shivaji Nagar No 2, Govandi, Mum - 400043
www.busks.org
Email: info@buaks.org
Phone No : +919821129343

अमीन ग्राफिक्स
पता: हक्कानी मस्जिद, रोड नंबर 10 शिवाजी नगर नंबर 2, गोवंडी,मुंबई - 400043
ईमेल: amingraphics43@gmail.com

Author Note

Hello readers, myself I'm Iqbal Khan also Known as "Anjum Lucknowi" I'm the author of this book I need to thank you for showing interest to read my book. Azmat-e-maa was not in written in single day yes it took 6 month to complete this book. Usually I write for myself on life events which I feel so much happy nor sad I use to write as poem, qoutes in English or Urdu.

I hope you would love Azmat e Maa, read the book and enjoy.

"Anjum Lucknowi"

लेखक नोट

नमस्कार पाठकों, मैं खुद इकबाल खान हूं, जिन्हें "अंजुम लखनवी" के नाम से भी जाना जाता है, मैं इस पुस्तक का लेखक हूं, मेरी पुस्तक को पढ़ने में रुचि दिखाने के लिए मुझे आपको धन्यवाद देने की आवश्यकता है। अज़मत-ए-माँ एक दिन में नहीं लिखी गई हाँ इस किताब को पूरा करने में 6 महीने लगे। आमतौर पर मैं अपने लिए जीवन की उन घटनाओं पर लिखता हूं जिन्हें मैं बहुत खुश या दुखी महसूस करता हूं, मैं उर्दू या हिंदी में कविता, उद्धरण के रूप में लिखता हूं।

मुझे आशा है कि आप अज़मत ए माँ को पसंद करेंगे, किताब पढ़ेंगे और आनंद लेंगे।

"अंजुम लखनवी"

Appreciation

Assalamualaikum, may Allah's mercy and blessings be upon you, there is no one but the Lord of the Worlds, and to imitate the Messenger of God (peace and blessings of Allah be upon him) is a duty and life. Were they conscious or are they or will be in the next generation, they listen to everyone and act, all of them will be happy in the field of Mahshar. Beloved Prophet of Allah, Prophet Muhammad (pbuh) told about the rights of parents whose testimonies are recorded in hadiths. We must follow the path given by the Qur'an and Hadith, otherwise we do not know what will happen to us. Punishment of the sinner is the work of the Lord of Knowledge. Why don't we make a commitment from today, to obey God and the Messenger and obey our parents, which is our duty. And wash away your sins. Before the father is closed. We believe that God Almighty is very kind and merciful, He is the one who forgives our sins. We are also sure that this poetry collection of Anjum Lakhnavi Sahib, which is in front of you in the light of Quran and Hadith, reading it, the children of our nation will definitely benefit.

I pray that Allah Almighty gives us all the opportunity to serve our parents Ameen.

Only peace and blessings be upon him:
Imam Aish Muhammad Qadri (Mumbai)

Contant

अनुक्रमणिका

अल-हम्दु लिल्लाहि रबिल आलमीन
तमाम तारीफै उस अल्लाह के लिए जो सारे जहानों का रब है।

हम्द

मद्दाह मैं तेरा हूं जुमले पए हाजत दे ।
असनाफे तगज्जुल की बहरों पे हुकूमत दे ।।

तू कादिरे मुतलक है नावाकिफे मुतलक मैं।
तू चाहे तो इज्ज़त दे तू चाहे तो जिल्लत दे ।।

सदयों के लिए रखदूं सर अपना मैं सजदे में।
असहाबे कहफ जैसी तू तर्फे इबादत दे ।।

सबज़ा भी करे बातैं तासीर बयानी की।
बुकात को जब खालिक लुकमान सी हिकमत दे।।

फूलों के लिए शबनम अफलाक से बरसाए।
कलयों को तबस्सुम दे पंखड़ियों को निकहत दे ।।

महबूब को जब चाहे खुद अर्श पे बुलवाले।
और हज़रते मूसा को दीदार की हसरत दे।।

याकूब की आंखों में भर देता हैतारीकी ।
अय्यूब के जखमों की कीड़ों को भी दावत दे ।

यूनुस को बनाता है वह लुकमए माही भी ।
माही के शिकम में फिर यूनुस को हिफाज़त दे ।।

रूठे जो फरिशते से पर छीन भी लेता है।
वह चाहे तो फितरुस को परवाज़ की ताक़त दे ।।

दौलत के इवज़ उसने ईमान फरोशी की।
मुम्किन ही नही खालिक शद्दाद को जन्नत दे ।।

यह उसकी करीमी का एजाज़ अनोखा है।
कंकर को ज़बाँ बखशे और जज़बए मिदहत दे ।।

हो तेरा करम या रब हर लफ्ज़ बने अंजुम ।
किरतास पे जब खामा तहरीर की सूरत दे।।

هذا من فضل ربي

यह मेरे रब के फ़ज़ल से है।

नूरे खुदा तसवीरे नबी, हाजा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी ।
जो है मुहिब महबूब वही, हाजा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी।

अव्वल भी हैं आखिर भी, बातिन भी हैं ज़ाहिर भी।
उम्मी व हाशमी मुत्तलबी, हाज़ा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी।

नाज़िशे आदम और ईसा, फख़रे सुलैमान व यहया ।
सब नबयों में आला नबी, हाज़ा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी |

रहमत है हिचकोले में, झूलें मुहम्मद झूले में।
लोरी सुनाएं आमिना बी, हाज़ा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी।

शाफ-ए-महशर सल्ले अला ,कासिमे कौसर सल्ले अला।
दूर करेंगे तिष्ना लबी, हाज़ा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी ।

पांव ना रख चल सर के बल, खुश हों नबी कर ऐसा अमल।
होने ना पाए बे अदबी, हाज़ा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी ।

बोलो चाहे जो भी ज़बां, सुनते हैं आकाए जहां ।
फारसी उर्दू या अरबी, हाजा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी ।

नाते मुहम्मद कुरआं है , ये तो कलामे यज़दा यज़दां है।
(अंजुम) ने दोहराई वही, हाजा मिन फ़ज़ल-ए-रब्बी ।

तलमीह

है कश्ती नूह की तूफान का हो डर कैसे ।
रुकेगी देखना जूदी पहाड़ पर कैसे।

खुदा के नाम पे कुरबाँ हुए थे इस्माईल ।
छुरी चली तो हुआ जब्हा जानवर कैसे।

यह मानता हूँ है आतिशकदा तेरा नमरूद ।
तपिश करेगी बराहीम पे असर कैसे ।

न भूला ज़र्बते मूसा भी आरिज़े फिरऔन ।
तमाचा मार गए दाढ़ी नोच कर कैसे।

असा कलीम ने मारा था आबे दरिया पर ।
तुम्हीं बताओ बनी उसमें रहगुज़र कैसे।

हवा में नन्हें परिंदे पड़ाव डाले हैं।
ऐ अबरहा तू गिराएगा रब का घर कैसे ।

कहीं पे ईसा हैं लुकमान हैं अरस्तू हैं ।
ज़मीं पे खल्क किए हक ने चारागर कैसे।

यहतेरा काम हैया रब कहा सुलैमां ने ।
खिलाता मछली को खाना मैं पेट भर कैसे ।

महद में आंख खुली थी लहद में याद आया ।
हमें पता ना चला कट गया सफर कैसे ।

खुदा की कारागरी से यह ज़ेहन कासिर है।
जहां में फैल गई ख़ाक मुश्त भर कैसे ।

बदन पे ज़ख़्म हैं कीड़े भी उस में हैं अंजुम ।
मकामे सब पे अय्यूब हैं मगर कैसे।

इश्क-ए-पंजतन

मेरा दिल हुसैनी है मेरी जाँ हुसैनी है।
और मेरे होटों पे दास्तां हुसैनी है।।

क्यूं ना मेरी रग रग में इश्क पंजतन दौड़े।
बाप भी हुसैनी है मेरी मां हुसैनी है ।।

मुस्तफा के जलवों से कायनात रौशन है।
चाँद भी हुसैनी है कहकशां हुसैनी है ।।

इकतदार ज़ालिम का खत्म हो ही जाता है।
मिट गए यज़ीदी सब जावेद हुसैनी है ।।

हुर्र ने बस यही कह कर अपनी जां निछावर की ।
मैं जनां का तालिब हूं और जनां हुसैनी है ।।

हाथ काट लो मेरे चाहे सर कलम कर दो।
मौत आ नहीं सकती मेरी जां हुसैनी है।।

जिसपे दाना पानी की लग गई है पाबंदी ।
कर्बला में वह हक पर कारवां हुसैनी है।।

हुर्रमला ने फेंका जब तीर हल्के असगर पे।
मसलेहत पुकार उठी यह भी हां हुसैनी है।।

कौन ज़ोरे कासिम का सामना करे आखिर ।
लशकरे अदू बोले यह जवां हुसैनी है ।।

गम अगर सताए तो तुम पुकार लो अंजुम ।
कर्बला की धरती पे आसतां हुसैनी है।।

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَاناً وَذِي الْقُرْبى وَالْيَا وَالْمَسْكِينَ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْناً
और अपने माँ बाप के साथ भलाई करो, और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से
और लोगों से अच्छी तरीके से बात करो।

माँ

यतीमी खूँ रुलाती है बदन बेजान लगता है।
ना हो जिस घर में माँ वहघर मुझे वीरान लगता है।

मैं सच कहता हूँ माँ के पाक आंचल की कसम खाकर ।
मुझे तो माँ का चेहरा इश्क का कुरआन लगाता है।

मुझे लगती है जब ठोकर तड़प जाती है मेरी माँ ।
जवानी में भी मादर को पिसर नादान लगाता है।

मेरी माँ भूकी प्यासी बैठी रहती है मेरी खातिर ।
मैं जब घर लौट आता हूंतो दस्तरख्वान लगता है।

हैमाँ की गोंद पहला मदरसा और मैं मुअल्लिम हूँ ।
पडोसी यहना कह पाया तू नाफरमान लगता है ।

सितारे टाक लेती है मेरी माँ जब भी आंचल में ।
मुझे भी आस्माँ छूना बहुत आसान लगता है।

अताअत कर नबी की और अपनी माँ को राजी कर ।
कहा किसने की बख्शिश में बहुत सामान लगता है।

हुई जिस दिन से रुखसत मेरी मां दुनियाए फानी से ।
मेरा चेहरा भी रिश्तेदारों को अनजान लगता है।

हर इक इंसान को होना है पैवंदे ज़मीं अंजुम ।
मुझे हर आदमी दुनिया में इक मेहमान लगता है ।

وَاعْبُدُ اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئاً وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَاناً وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينَ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ. إِنَّ اللّٰهَ لا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُختالاً فَخُورًا - (پاره ۵ سوره نساء)

और अल्लाह की बंदगी करो और उसका शरीक किसी को ना ठहराओ और माँ बाप से भलाई करो और रिश्तादारों और यतीमों और मुहताजों और पास के हमसाये और दूर के हमसाये और करवट के साथ और राहगीर और अपनी बांदी गुलाम से। बेशक अल्लाह को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।

भलाई करो

कुरआन कह रहा है जो तुम से वही करे।
हर लम्हा किरदगार की तुम बंदगी करो

कब उसका है शरीक खुदा लाशरीक है।
काफिर अगर शरीक कहेतो नफी करो।

सूरह निसा में कहता है परवरदिगार यह ।
माँ बाप से भलाई करो पैरवी करो ।

मुहताजों से यतीमों से और रिश्तेदारों से।
अल्लाह कह रहा है कि तुम दिल लगी करो।

नज़दीक के पड़ोसी हों चाहे वह दूर के ।
करवट के साथियों पे फिदा जिंदगी करो।

रहगीर और मुसाफिर व मेहमाँ के साथ भी ।
जो हुक्म है खुदा का मुहब्बत वही करो।

मुम्किन है सादा लौही भी बांदी गुलाम से ।
तुम जब भी गुफ्तगू करो जाहिर खुशी करो ।

इतराना और बड़ाई दिखाना गुनाह है।
अंजुम खुदाए पाक की ताज़ीम भी करो ।

कुरआने पाक में अल्लाह तआला ने अपने हक़ के साथ उनका हक फरमायाः।

أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ

यानी हक मान मेरा और अपने माँ बाप का।

हक़ है

आयतें कहती हैं कुरआन बताता हक़ है।
तुझ पे माँ बाप का हक़ और खुदा का हक है।

अपने हमसाये से करना है मुहब्बत तुझ को।
रिशतेदारों से पड़ोसी का ज्यादा हक है।

अपने अल्लाहकी रस्सी को पकड़ लो मज़बूत ।
बा-शरअ बाप जो दिखलाए वह रस्ता हक़ है।

माँ ने पंजवक्ता नमाज़ों का सबक देके कहा ।
सिर्फ अल्लाह के आगे तेरा झुकना हक़ है।

ऐ खुदा दे मेरे माँ बाप को हज की तौफीक ।
है यह अंजुम की दुआ खान-ए-काबा हक़ है।

हुजूर अवदस स.अ. स. फरमाते हैं:

اِن مِنَ الْبِرِّ بَعْدَ الْمَوتِ أَنْ تُصَلِّ لَهُمَا مَعْ صَلَاتِكَ وَتَصُومَ لَهُمَا مَعْ صِيَامِكَ (دار قطنی)

माँ बाप के बाद इंतेकाल) नेक सुलूक से यह है कि तू अपने रोज़ों के साथ उनके वासते भी रोज़े रखे।

दुआए खैर

जुदा जो होगए माँ बाप इंतेकाल के बाद ।
दुआए खैर ज़रूरी है इस मिसाल के बाद ।

पढ़ो नमाज़ जो अपने लिए तो उनके लिए।
नबी ने हुक्म दिया रब्बे जुल जलाल के बाद ।

तुम अपने रोज़ों के हमराह उनके रोज़े रखो ।
यही जवाब नबी ने दिया सवाल के बाद ।

खुला हुआ है दरे तोबा, दिल से तौबा कर ।
उरूज चाहिए बंदे अगर ज़वाल के बाद ।

खुदा के आगे यूं सजदा है लाज़मी अंजुम ।
अज़ान जैसे कि कायम रही बिलाल के बाद ।

हुजूर नबीए करीम स. ने इरशाद फरमाया:

(إذا تَرَكَ الْعَبْدُ اللعَا لِلْوَالِدَيْنِ فَإِنَّهُ يَنقَطِعُ عَنْهُ الرِّزْقَ (طبرانى

बंदा जब मां बाप के लिए दुआ तर्क कर देता है तो उसका रिज़्क
मुंकते यानी बंद हो जाता है।

तर्के दुआ

दुआ माँ बाप के हक में जो बंदा तर्क करता है।
खुदा-ए-पाक उसको रिज़्क़ देना तर्क करता है।

है इरशादे मुहम्मद मुस्तफा हुक्मे खुदावंदी ।
जहन्नम में वह जाएगा जो सजदा तर्क करता है।

तेरे माँ बाप के किस दर्जा एहसानात हैं तुझ पर।
मगर इक तू है कि अपना फरीज़ा तर्क करता है।

कभी यह सोच कैसे परवरिश माँ बाप ने की थी ।
जवाँ होकर तू क्यूं उनकी तमन्ना तर्क करता है।

हदीसे मुस्तफा पर अपना तो ईमान है अंजुम ।
वह काफिर होगया है जो अक़ीदा तर्क करता है।

النا كُمْ وَعُقُوقِ الْوَالِدَيْنِ فَإِنَّ الحَملة يُوجِدُرِيعَهَا مِنْ مَسِيرَةِ أَلْف عَامٍ وَلَا تَجِدُ عَالٌ وَقَاطِعُ رحم ولا شَيْخَ زَانٍ وَلَا جَاز
ازاره خَيْلا ءان الكبرية للعرب العلمين - تغير مارك ج٢

हज़रत स.अ. स. फरमाते हैं वालिदैन की नाफरमानी से बच्चो इसलिए कि जन्नत की खुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और मां बाप का नाफरमान उसकी खुश्बू ना सूंघ सकेगा और इसी तरह रिश्ता कृता करने वाला, बूढ़ा जिना करने वाला और तकब्बुर से अपना इज़ार (तहबंद) टखनों से नीचे लटकाने वाला भी जहन्नम की खुश्बू ना पाएगा। इसके बाद आपने फरमाया कि बेशक किबरियाई तो परवरदिगारे आलम ही को लाएक है।

नाफरमानी

तुम खुद को महफ़ूज़ रखे माँ बाप की नाफरमानी से।
जन्नत का हक़दार जहन्नम जाता है नादानी से ।

नाफरमान औलादें जन्नत की खुश्बू को तरसेंगी।
माँ से रिश्ता तोड़ने वाले डर कहरे यज़दानी से ।

बूढ़ा जानी और तकब्बुर टखने बंद जो रखता है।
बूए जनां से यह तीनों महरूम हैं नाफरमानी से ।

जिसका तकवा बेहतर होगा वह जन्नत में जाएगा।
दाखिले जन्नत हो नहीं सकता कोई भी आसानी से ।

कहते हैं सरकारे दोआलम कादिरे मुतलक है माबूद ।
अंजुम सर सजदे में रख कर कहता है पेशानी से ।

रसूलुल्लाह स. ने इरशाद फरमाया:

فالزمها فان الجنة عند رجلها (نسائی شریف) यानी तू माँ की खिदमत अपने ऊपर लाज़िम कर ले इसलिए कि जन्नत उसके कदमों के पास है।

जन्नत

इरशादे मुस्तफा से कहाँ दिल उदास है।
जन्नत तो मेरी माँ तेरे क़दमों के पास है।

माँ पानी ढूंढ़ती रही चश्मा उबल पड़ा।
ज़मज़म है एड़ियों तले कैसी यह प्यास है।

मुनकिर जो है खुदा व नबी, वालिदैन का।
महशर में बस उसी को तो ख़ौफो हरास है।

कहती है बार बार हदीसे रसूल यह ।
माँ बाप का तो प्यार ता हद्दे क्यास है।

औलाद ज़ेब तन रही फैशन के दौर में ।
लेकिन बदन पे माँ के फटा इक लिबास है।

अंजुम जो भूल बैठा है माँ बाप के हुकूक
बेकार ऐसे शख्स को जन्नत की आस है।

रसूले खुदा स. ने इरशाद फरमाया:

رِضًا الرب فى رضا الوالد وسخط الرب في سخط الوالد
खुदा की खुशनूदी बाप की खुशनूदी और उसकी नाराज़गी बाप की नाराज़गी में है

रिज़ा

रिज़ारब को समझये और समझये फी रिज़ा वालिद ।
खफा रब होगया उस से हुए जिस के खफा वालिद ।

खताएं मोमिनों की ऐ खुदा तू दरगुज़र कर दे।
जनाबे फातिमा के हैं मुहम्मद मुस्तफा वालिद ।

खुदा का शुक्र है हासिल है मुझको शफ्कृते पिदरी ।
तेरी खातिर तो हैं बाद अज़ खुदा हाजत रवा वालिद ।

ये हैं जब तक तेरे हमराह इन की पैरवी कर ले।
बहुत तड़पेगा हो जाएंगे जब तुझ से जुदा वालिद ।

किताबे जिंदगी को इस लिए मैं चूम लेता हूँ।
कहीं है वालिदा लिख्खा, कहीं पर है लिखा वालिद ।

उन्हीं लोगों से तू अंजुम मेरा अल्लाह राज़ी है।
उठाकर हाथ देते हैं जिन्हें दिल से दुआ वालिद ।

हुज़ूर अकरम सय्यदे आलम स. ने इरशाद फरमाया:
هُمَا جَنَّتُكَ وَهُمَا نَارُكَ.
यानी वह दोनों माँ बाप तेरे जन्नत भी हैं दोजख भी।

हक का दुश्मन

यह एलाने खुदा है और मुहम्मद की नसीहत भी।
तेरे हक में तेरे माँ बाप दोज़ख भी हैं जन्नत भी।

जो अपने फर्ज़ से गाफिल रहा वह हक् का दुश्मन है।
गवाही देती है कुरआने नातिक की इबारत भी।

मुहब्बत की नज़र से देखना माँ बाप की जानिब।
खुदा को मुंह दिखाना है तुम्हें रोज़े क्यामत भी।

अगर जन्नत है माँ तो बाप है जन्नत का दरवाज़ा।
सनद गर दाखले की चाहिए लाज़िम है खिदमत भी।

सफर दरपेश है अंजुम दुआ माँ बाप की लेलो।
कि रस्ता रोकने आजाती है अकसर मुसीबत भी।

पैगम्बरे इस्लाम स. ने इरशाद फरमाया:

ثم اباك ثم ادنال فادناك (بخاری شریف
फिर अपने बाप से नेक सुलूक कर जो जितना तुझ से क़रीब हो।

क़ज़ा से पहले

अबा की पैरवी करना बहुत ज़रूरी है।
क़ज़ा से पहले संवरना बहुत ज़रूरी है।

है जब हदीस बुखारी हयात का मकसद ।
नबी के क़ौल पे मरना बहुत ज़रूरी है।

अना की धूप से बेहतर है सायये पिदरी ।
बलंदियों से उतरना बहुत ज़रूरी है।

हो नस्ले नौ के लिए राहे अमल की हमवार ।
नक्शे पा का उभरना बहुत ज़रूरी है।

खुदा करे तुझे अंजुम खुलूस का सूरज ।
अदब का नूर बिखरना बहुत जरूरी है।

पैगम्बरे इस्लाम स. ने इरशाद फरमाया:

ثم اباك ثم ادنال فادناك (بخاری شریف
फिर अपने बाप से नेक सुलूक कर जो जितना तुझ से क़रीब हो।

क़ज़ा से पहले

अबा की पैरवी करना बहुत ज़रूरी है।
क़ज़ा से पहले संवरना बहुत ज़रूरी है।

है जब हदीस बुखारी हयात का मकसद ।
नबी के क़ौल पे मरना बहुत ज़रूरी है।

अना की धूप से बेहतर है सायये पिदरी ।
बलंदियों से उतरना बहुत ज़रूरी है।

हो नस्ले नौ के लिए राहे अमल की हमवार ।
नक्शे पा का उभरना बहुत ज़रूरी है।

खुदा करे तुझे अंजुम खुलूस का सूरज ।
अदब का नूर बिखरना बहुत जरूरी है।

وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا (سورة لقمان پ ٢١ ، ع ١١
और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे ।

फरमाँबरदार

जो माँ बाप का साथ देता नहीं है।
खुदा के वह नज़दीक बंदा नहीं है।

खुदा की इताअत है माँ की इताअत ।
जो है फरमांबरदार रुस्वा नहीं है।

जो माँ हो खफा तो खुदा भी खफा हो ।
जो माँ का नहीं वह खुदा का नहीं है।

खुदा मेरे माँ बाप को मुझ से खुश रख ।
कोई जीते जी और तमन्ना नहीं है।

अगर माँ हो नाखुश यह अंजुम समझ लो ।
कि बख़शिश का कोई सहारा नहीं है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أَحمهُ كُرْهًا وَضَعْتَهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ تَلْقُونَ شَهْرًا (٢٦، ع٢)
(وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَالَيْسَ لكَ بِهِ عَلَمُ فَلَا تُطِعْهُمَا (پ ٢٠، ١٣٦

और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे उसकी मां ने उसे पेट में रखा तकलीफ से और जना उसको तकलीफ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुडाना तीस महीने में है । और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की और अगर वह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठेहराए जिसका तुझे इल्म नहीं

तो उनका कहना ना मान।

कर्ज़

जो हुक्म है खुदा का वह बंदा किया करे।
माँ बाप के हुकूक हमेशा अदा करे।

तकलीफ से रखा है तुझे माँ ने पेट में।
पैदा हो तू तो तुझको उठाए फिरा करे ।

पाला है उसने तीस महीने पिलाके दूध ।
आसाँ नहीं जो क़र्ज़ कोई यह अदा करे।

माँ बाप से भलाई करो कह रहा है रब ।
वह तो जहन्नमी है जो उन से दगा करे ।

अंजुम खुदा के सामने ठहराए जो शरीक ।
कहना ना मान चाहे माँ कुछ भी कहा करे।

(وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَاناً (سوره البقره پ ا ع ١٠

और माँ बाप के साथ भलाई करो ।

मोतबर

कह रहा है खुदा हक़ नुमाई करो।
साथ माँ बाप के तुम भलाई करो ।

आयतें कह रही हैं यह कुरआन की।
माँ की हर लम्हा मिदहत सराई करो।

रब के बंदों को पैग़ामे हक़ बांट कर ।
अपने गिरवीदा सारी खुदाई करो।

माँ का रुतबा है बाद अज़ खुदा मोतबर ।
कयों ना खुश हो खुदा तुम भलाई करो ।

पहला हक उसपे बनता है माँ बाप का ।
जिंदगी में जो अंजुम कमाई करे।

عَن أبي هريرة رضى الله عنه عن النبى ﷺ قال رغم انفة ثم رغم الفة ثم رغم الله قيل من يارسول الله قال من ادرك والديه عند الكبر احدهما او كلاهما ثم لم يدخل الجنة (مسلم شريف)

हज़रत अबूहुरैरह रजि. से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम स.अ.स. ने एक मरतबा फरमाया खाक आलूद हो उसकी नाक फिर खाक आलूद हो उसकी नाक फिर खाक आलूद हो उसकी नाक सहाबा ने अर्ज किया किसकी ऐ रसूलुल्लाह? फरमाया उसकी जिसने बूढ़े माँ बाप या उन दोनों में से किसी एक को पाया फिर जन्नती ना हुआ। यानी उनकी खिदमत ना की ना किसी और तरह उनकी रिज़ा व खुशनूदी हासिल की जिसके सबब से वह जन्नत का हकदार होता।

कौले हक

जो भी ताईदे कौले नबी ना हुआ।
आदमी फिर वह इंसां कभी ना हुआ।

नाक फिर ख़ाक आलूद आलूद हो ।
कौले हक़ कब बशक्ले वही ना हुआ।

बोले असहाब जब तो नबी ने कहा ।
पाके माँ बाप जो जन्नती ना हुआ।

जिसने खुशनूदी हासिल की माँ बाप की।
उसको जन्नत मिली दोज़खी ना हुआ।

जिस ने तोड़ा है दिल अपने माँ बाप का ।
सुरखुरू फिर वह अंजुम कभी ना हुआ।

(إِنَّ اللّٰہ حَرَّمَ عَلَيْكُمُ عقوق الامهات (بخاری شریف

बेशक अल्लाह तआला ने तुम लोगों पर माओं की
नाफरमानी हराम फरमा दी है।

माँ की दुआयें

उम्मत को सरकारे दोआलम बांट रहे हैं यह पैग़ाम ।
तुम लोगों पर रब ने की है माँ की नाफरमानी हराम ।

माँ की पैरवी करना बेशक नफ्ल नमाज़ों से अफज़ल
।
रब के आगे करना होगा शुक्र के सजदे सुब्हो शाम।

दुनिया वालो गौर से सुन लो माँ का रुतबा आला है।
माँ की जो तौहीन करेगा होगा वह बदनाम ।

माँ की दुआयें साथ अगर हों आफत क्या टकराएगी।
रस्ता है पुरखार मुसाफिर चलना तेरा काम ।

उसका रुतबा क्या कहना कुरआन गवाही देता है।
क्यूं ना अंजुम उम्र में अपनी करदूं माँ के नाम ।

ار شادر بانی ہے: وَقَى رَبُّكَ الأَتَعْبُدُوا الاٌ إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الكبر
أحدهما أو كلهُمَا فَلا تَقُلْ لَهُمَا أَي وَلا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلاً كَرِيمًا وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ اللّٰهِ
(مَنَ الرَّحْمَةَ وَقُل رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيراً . (پاره ۱۵، ۳۶

और तुम्हारे रथ ने हुक्म फरमाया कि उसके सिवा किसी को ना पूजो और मां बाप के साथ यह है शरहे हक़ीक़त मैं नहीं कुरआन कहता है। करो माँ बाप की ख़िदमत यही रहमान कहता है। खुदा का हुक्म है माँ बाप की तुम पैरवी कर लो। यह है अहकामे दावर खुशनुमा तुम जिंदगी कर लो । जो उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं। ना करना काम तुम ऐसा कोई वह जिससे शरमाएं। कभी तुम उफ ना कहना, ना उन्हें हरगिज़ झिड़कना । खुदा का हुक्म है उनकी सदा ताज़ीम करना तुम | खुदा से आजिज़ी करना खुदा से यह दुआ करना । ऐ मेरे रब रहीमी दोनो जानिब बरमला करना । मुझे अंजुम इन्हीं दोनों ने छोटेपन से पाला है। जवानी तक मेरे माँ बाप ने मुझ को संभाला है।

कुरआन कहता है

यह है शरहे हक़ीक़त मैं नहीं कुरआन कहता है।
करो माँ बाप की ख़िदमत यही रहमान कहता है।

खुदा का हुक्म है माँ बाप की तुम पैरवी कर लो।
यह है अहकामे दावर खुशनुमा तुम जिंदगी कर लो।

जो उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं।
ना करना काम तुम ऐसा कोई वह जिससे शरमाएं।

कभी तुम उफ ना कहना, ना उन्हें हरगिज़ झिड़कना ।
खुदा का हुक्म है उनकी सदा ताज़ीम करना तुम ।

खुदा से आजिज़ी करना खुदा से यह दुआ करना ।
ऐ मेरे रब रहीमी दोनो जानिब बरमला करना ।

मुझे अंजुम इन्हीं दोनों ने छोटेपन से पाला है।
जवानी तक मेरे माँ बाप ने मुझ को संभाला है।

शरीके ग़म

धड़कनों की ज़बाँ समझती है।
दर्द बेटे का माँ समझती है।

माँ का रुतबा बता रहे हैं रसूल ।
पर ये दुनिया कहां समझती है।

हो ही जाती है माँ शरीके ग़म ।
सुन के जब दास्ताँ समझती है।

बच्चा रोता है जब भी झूले में।
मम्ता आहो फुगाँ समझती है।

माँ की उंगली पकड़ रही है हयात ।
अपना रूहेरवाँ समझती है।

चूम लेती है माँ के पैरों को ।
यहजबीं आस्ताँ समझती है।

माँ के एहसान याद कर अंजुम ।
जिंदगी मेहरबाँ समझती है।

हयाते नौ

लबों तक वे सबब आती नहीं यह हिचकियाँ मेरी ।
मुझे फुरकृत में शायद याद करती होगी माँ मेरी।

मेरे वालिद का रुतबा मेरे हक में बाबे जन्नत है।
मगर यह माँ का रुतबा पावं के नीचे जनां मेरी।

मेरी माँ ने हयाते नौ को वह आदाब सिखलाए।
खुलेगी बदकलामी के लिए कैसे ज़बाँ मेरी ।

पकड़ कर माँ की उंगली जब से मैं ने चलना सीखा है।
ना भटका राह से देगा गवाही कारवाँ मेरी ।

बड़ा मुजरिम है वह जिसने अज़ीयत माँ को पहुंचाई।
अभी तक मुनकिरे माँ से जुदा है दास्ताँ मेरी ।

मुझे अंजुम मेरी माँ ने कहा नूरे नज़र जब से।
उसी दिन से तो बस तकता है सूरत आस्माँ मेरी ।

ग़मे मादर

जो हुआ महरूम माँ के प्यार से ।
वह खुशी क्या पाए रिश्तेदार से।

खूँ पिलाकर उसने पाला है मुझे।
क्यूं ना मांगे हक वह मुझ नादार से ।

शीरे मादर सौ मरज़ की है दवा ।
यह कहा बुकात ने बीमार से ।

याद है रातों का इसका जागना ।
और सीने पर सुलाना प्यार से।

माँ सिखाती थी हमें रोज़ा नमाज़ ।
किस कदर पाकीज़ा थी किरदार से ।

वह गई तो सारी खुशियाँ छिन गईं।
सारे मंज़र हो गए बेकार से।

वह सिपुर्दे खाक होकर रह गई ।
दिल तड़पता हैग़में दीदार से।

याद जब आती है उसकी लोरियाँ ।
मैं लिपट कर रोता हूं दीवार से ।

माँ की बाहों का वहझूला याद है।
थपकियाँ देकर झुलाना प्यार से ।

माँ के कदमों के तले जन्नत भी है।
सच सुना है अहमदे मुख्तार से ।

हर क़दम माँ की दुआयें साथ हैं।
क्यूं डरे अंजुम रहे पुरखार से ।

दुखयारी माँ

खुश होती है जब सुनती है बच्चों की किलकारी माँ।
शुक्र है रब का रब ने बखशी हमको ऐसी प्यारी माँ।

नींद से उठ कर मैंने देखा इतना प्यार खुदा के बाद।
सो जाते हैं बच्चे तो करती है पहरेदारी माँ।

दूध की सूरत खून पिलाकर तूने मुझ को पाला है।
सच कहता हूँ मुझ से न होगी तेरी दिल आज़ारी माँ।

भाई बहन सब फूल के जैसे कल भी थे और आज भी हैं।
उनके बीच नज़र आती है इक महकी फुलवारी माँ।

जिसका बेटा नालायक है, देखा है इन आखों ने।
शहर की गलियों में फिरती है उसकी मारी मारी माँ।

हाए मेरी किस्मत के लम्हे जब फाके से गुज़रे थे।
मेरे साथ रही दुख-सुख में पर नहीं हिम्मत हारी माँ।

बेटे और बहू ने अंजुम उसपर कितना जुल्म किया।
कौन सुनेगा किससे बोले आख़िर इक दुखियारी माँ।

रिश्ता

यूँ तो कहने को हर इक चाहने वाला होगा।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

यह वह रिश्ता है जो पाकीज़ा हुआ करता है।
माँ का दिल बेटे के बस हक में दुआ करता है।

साथ हो जिसके दुआ उसका बुरा क्या होगा।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

फरमां बरदार पे तो फूल बरस्ते होंगे ।
माँ की खिदमत को फरिश्ते भी तरस्ते होंगे।

मेरी किस्मत पे तअज्जुब उन्हें होता होगा।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

माँ ना जिस घर में हो उस घर का है आंगन सूना ।
सब्ज़ गुलशन को भी कहना पड़े गुलशन सूना ।

ऐसे गुलशन में कोई पेड़ हरा क्या होगा ।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

कितने नाज़ों से मेरी माँ ने हैपाला मुझको।
भूक से पहले ही देती है नवाला मुझ को ।

माँ के एहसान का हक़ मुझ से अदा क्या होगा।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

तुम को बतलाता हूं मैं माँ की फजीलत क्या है।
माँ के कदमों तले जन्नत का दरीचा वा है ।

यह है फरमाने नबी यहनहीं झूटा होगा ।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

जब यतीमी को ज़माना मेरी ठुकराता है।
माँ का दिल कब्र के अंदर भी तड़प जाता है।

उसकी ममता को मेरा रब ही समझता होगा ।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा ।

मुझ पे प्रदेस में अंजुम जो बला आती है।
माँ तसव्वुर में मेरे सामने आ जाती है।

मैं समझता हूं यही वक्त दुआ का होगा ।
माँ के रिश्ते से बड़ा क्या कोई रिश्ता होगा।

वालिदैन

कुरआन कह रहा है कि अफ़ज़ल हैं वालिदैन ।
तकलीदे हक बेनाए तवक्कल हैं वालिदैन ।

उनके हुकूक पूछिये कुरआन पाक से ।
बेशक हदीसे ताइदे मुर्सल हैं वालिदैन ।

अदबो लिहाज़ उनका तो बेहद है लाज़मी ।
मफहूमे परवरिश में मुकम्मल हैं वालिदैन ।

तिफली से पूछ चाहे जवानी से पूछ ले।
बेटा तेरी ही फिक्र में हर पल हैं वालिदैन ।

माँ बाप की दुआ से संवरती है आखिरत ।
पागल हैं वह जो कहते हैं पागल हैं वालिदैन ।

अंजुम गमे हयात मुअम्मा लगेगा क्यूं ।
हर लमहा इक सवाल है तो हल हैं वालिदैन ।

इस्मते मरयम

मेरे लबों पर माँ की मिदहत कल भी थी और आज भी है।
पाकीज़ा मरयम की इस्मत कल भी थी और आज भी है।

उम्मीदों के गुलशन में कुछ रंग बिरंगे फूल खिले ।
उनमें माँ के प्यार की निकहत कल भी थी और आज भी है।

नगुमा जन हैं नन्हें बच्चे शाम ढले अंगनाई में।
अम्मी जान से घर की ज़ीनत कल भी थी और आज भी है।

लिख्खा है यह शाफए महशर का फरमान हदीसों में।
मां के पांव के नीचे जन्नत कल भी थी और आज भी है।

इक रोते बच्चे को हंसाना कितना मुश्किल होता है।
लेकिन यह ममता की फितरत कल भी थी और आज भी है।

चन्द यतीमों की बातों से अंजुम को महसूस हुआ।
इन बच्चों को माँ की ज़रूरत कल भी थी और आज भी है।

झूट मत बोलो!

इक भरा घर संभालती हैमाँ ।
अपने बच्चों को पालती हैमाँ ।

दुख उठाकर दुआयें दे दे के ।
हर मुसीबत को टालती है माँ ।

आग पे रख के सब्र की हांडी ।
रोज कंकर उबालती हैमाँ ।

गुनगुनाती है लोरियां अक्सर ।
गोद में जब उछालती है माँ ।

करके ताकीद झूठ मत बोलो।
सच के सांचे में ढालती हैमाँ ।

बच्चे बाहर निकाल देते हैं।
किसको घर से निकालती है माँ ।

फिके अंजुम जहां है गोता जन ।
वह समुंदर खंगालती हैमाँ ।

Yaad kar aalam arwah ka wadah apna
Bhool baitha hai faramosh madawa apna
Yani talqeen 'e' bakhud dawat sajda apna
Mere bandon ko banata raha banda apna

Ahke imaan karen firon ko kaise tasleem
Mere munkar pe musallat hai abhi zarb kaleem

یاد کر عالم ارواح کا وعدہ اپنا
بھول بیٹھا ہے فراموش مداوا اپنا
یعنی تلقینِ بخود دعوت سجدہ اپنا
میرے بندوں کو بناتا رہا بندہ اپنا

اہل ایماں کریں فرعون کو کیسے تسلیم
میرے منکر پہ مسلط ہے ابھی ضرب کلیم

काएनाते दिल

जिंदगी की खुली किताब है माँ ।
और फजीलत का पहला बाब हैमाँ ।

जिस से रोशन हैकाएनाते दिल।
वहदरखशिंदा माहताब है माँ ।

तेरी हक़ बात मानने के इवज़ ।
मेरे हक में बड़ा सवाब है माँ ।

इक तेरा प्यार हासिले ताज़ीम ।
वैसे दुनिया बहुत खराब है माँ ।

मुझ से कल इक यतीम ने यह कहा ।
आज भी मेरे महवे ख्वाब हैमाँ ।

मेरा रोना हैना पसंद तुझे ।
तेरी कुरबत ही लाजवाब हैमाँ ।

सब हैं अपनों के महे ख्वाँ अंजुम ।
मेरी काविश का इंतेखाब है माँ ।

माँ की रिज़ा

मैं मरीज़े गये दिल हूँ यह दवा काफी है।
ऐ मेरी माँ तेरे आंचल की हवा काफी है।

तू अगर चाहे तो इक पल में वली करदे मुझे।
इस करामत के लिए तेरी दुआ काफी है।

तर्जमा माँ ने बताया है मुझे कलमे का।
अहले ईमाँ के लिए एक खुदा काफी है।

दौरे तिफली से यही दर्स दिया है माँ ने ।
कर मुहम्मद से वफा इसका सिला काफी है।

माँ जो कहती है उसी काम पे नाज़ाँ रहना ।
सरफराज़ी के लिए माँ की रिज़ा काफी है।

है यह फरमाने नबी माँ जो खफा हो जाए।
करदे महरूमिए जन्नत यह ख़ता काफी है।

सर छुपाने की जगह ढूंढ़िए अंजुम साहब ।
मेरे छिपने के लिए माँ की रिदा काफी है।

खातूने जन्नत

है मालिके बहिश्त ग़रीबुल वतन की माँ ।
बे मिस्ल है जहां में हुसैन व हसन की माँ ।

बिन्ते नबी का पाक लबादा नज़र में है।
कोशां है मुद्दतों से उसी पैरहन की माँ ।

ज़िन्दाँ से आ रही है यहमज़लूम की सदा ।
क्यों फिक्र कर रही है तु दारो रसन की माँ ।

अफसोस यूँ भी होता है अनजामे परवरिश ।
दर दर भटक रही है किसी बदचलन की माँ ।

अंजुम जहां खड़ा है चरागे अदब लिए।
रौनक बनी हुई है उसी अंजुमन की माँ ।

दुआ का ताज

तल्ख भी है तो चाशनी है माँ ।
मन जो मोहे वह मोहनी है माँ ।

उसको तकलीफ मेरे रोने से।
कौन सी मिट्टी से बनी है माँ ।

सर पे रख देती है दुआ का ताज ।
देखो कितनी बड़ी धनी है माँ ।

क्यूं ना दुनियाए दिल मुनव्वर हो ।
चाँद है बाप चाँदनी है माँ ।

तुम भी आंचल की छावँ में बैठो।
कब वहदीवारे आहनी हैमाँ ।

यहहदीसे रसूल कहती है ।
इक हिदायत की रोशनी हैमाँ ।

लोरियाँ सुन के सो गया अंजुम ।
प्यार की ऐसी रागनी है माँ ।

लोरियाँ

रोने लगता हूँ जब भी झूले में ।
फिर मुझे गोद में उठाती है।

मुझको झूले में जब झुलाती है।
माँ मुझे लोरियाँ सुनाती है।

मुंहसे झड़ती हैं चाहतों के फूल ।
जब मगन होके गुनगुनाती है।

मेरा रोना उसे पसंद नहीं।
इस लिए मुझ को वह हंसाती है।

माँ का रिश्ता अजीब है अंजुम ।
अपने बच्चों पे जाँ लुटाती है।

हज्जे काबा

माँ का रुतबा अजीब है तो है ।
वह खुदा के करीब है तो है ।

शिकमे मादर में अंबिया भी रहे।
माँ बहुत खुश नसीब है तो है ।

हज्जे काबा तुझे करा ना सका।
तेरा बेटा गरीब है तो है ।

क्यूं ना बेटे का दर्द समझे माँ।
मुनफिद वहतबीब है तो है ।

शुक्र है रब का माँ है खुश अंजुम ।
सारी दुनिया रकीब है तो है ।

बद-किस्मत

मुहब्ब्त क्या अजब शै है बहुत बे चैन होते हैं।
अगर बीमार हो बच्चा कहां मां बाप सोते हैं।

जवां बेटे का यह आलम रहे आवारगी पर है।
मगर मां बाप तो ग़ैरों के अबतक बोझ ढोते हैं।

जो हैं बद ज़ेन वह सब गोता जन हैं बहरे इस्यां में ।
सुना है ना खुदा कश्ती के खुद कश्ती डुबोते हैं।

बुढ़ापे का असा मां बाप की नज़रों में बेटा था ।
वह नाफरमान जब से हो गया है दोनों रोते हैं।

वहखुश किस्मत है अंजुम जिसने की अख़लाक़ की खेती।
जो बद-किस्मत हैं नफरत के हमेशा बीज बोते हैं।